परिचय

कुछ साल पहले की बात है, मेरी एक मित्र ने मुझसे एक ज्योतिषी के पास चलने का आग्रह किया। उन ज्योतिषी को प्यार से 'मास्टरजी' कहा जाता है। उनके बारे में बताते हुए उसने बताया कि वह एक वृद्ध और सुदर्शन व्यक्ति हैं, पान चबाते रहते हैं और गोआ में कैंडोलिम होटल में पिछली तरफ़ उनका कार्यालय है। मेरे अंदर तुरंत एक उत्सुकता जागी कि किसी होटल में एक ज्योतिषी क्या कर रहा है। ऊपर से, मेरी मित्र द्वारा किए गए उनके उस ज्योतिषी मित्र के विवरण ने मुझे बचपन में देखे गए आर.के.नारायण के 'मालगुडी डेज़' सीरियल की याद दिला दी थी।

जब मैं मास्टरजी से मिलने गया तो उनसे मिल कर मुझे बड़ा अच्छा महसूस हुआ, और लगा जैसे मैं आर.के.नारायण के कथा लोक में जा पहुंचा हूं। मास्टरजी ने मेरी जन्म-पत्री बड़ी सही तरह से पढ़ी। इसलिए, उनसे मैंने अगले दिन का कोई समय अपनी माताजी के लिए मांगा क्योंकि वे भी कुछ पूछना चाहती थीं।

अगले दिन माताजी के साथ वहां जाने पर हुई बातचीत के दौरान मास्टरजी ने बताया कि उनकी पत्नी संत सरीखी हैं और शिरडी के साँई बाबा की भक्त हैं। वे पांच वर्ष की आयु से ही साँई से जुड़ी हुई हैं और कई बार सपनों में और दिव्य दर्शनों में बाबा की कृपा पा चुकी हैं। उस समय तक मैं साँई बाबा के बारे में बहुत अधिक नहीं जानता था, लेकिन मास्टरजी की पत्नी के बारे में - जिन्हें कि सब लोग 'आई' कहते हैं - सुन कर मेरे मन में उनसे मिलने की उत्सुकता जागी।

अगले दिन बड़ी अधीरता से मैंने मास्टरजी से पूछा कि क्या मैं आई से मिल सकता हूं और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकता हूं। उन्होंने कहा कि इसके लिए उन्हें आई से पूछना होगा, और अगर वे हां कह देती हैं तो वे उनसे अवश्य मिल सकते हैं। उन्होंने बताया कि आमतौर पर वह कम ही बोलती हैं और आत्मलीन रहती हैं। जब मैंने यह सुना तो मैं और भी उत्साहित हो उठा था यह सोच कर कि आई जैसे भक्त से मिलने का अवसर तो कभी-कभी ही मिलता है।

लगभग एक सप्ताह बाद, आई ने अपनी अनुमति प्रदान कर दी और मैं उनसे मिलने के लिए उनके घर पहुंच गया। उनके घर में जगह-जगह बाबा के चित्र और मूर्तियां लगी हुई थीं और वहां हर तरफ एक प्रकार की शांति महसूस हो रही थी। मैं कोंकणी या मराठी अच्छी तरह से बोल व समझ नहीं पाता हूं इसलिए मास्टरजी ही आई और मेरे बीच अनुवादक का काम कर रहे थे। आई के सान्निध्य में मैं एक सुखद सहजता अनुभव कर रहा था।

अगले दो वर्षों के दौरान, मैं आई से मिलने कई बार गया। मैं उनके प्रति एक खिंचाव अनुभव कर रहा था। हर बार उन्होंने अपने जीवन के कुछ वृत्तांत मुझे सुनाए और बाबा के साथ होने के कई अनुभव भी। सौभाग्य से, बाबा के साथ होने के कुछ निजी अनुभव मुझे भी प्राप्त होने लगे थे। तब मेरे मित्र और आध्यात्मिक पथप्रदर्शक गौतम सचदेव ने सुझाव दिया कि क्यों न इन सभी घटनाओं को एक पुस्तक रूप में संकलित कर लिया जाए जो कि साँई बाबा के भक्तों को प्रेरित कर सकें क्योंकि आई का जीवन तो बाबा की शाश्वत कृपा का जीता-जागता प्रमाण है और वह एक ऐसी माध्यम हैं जिनके जरिए बाबा अपनी कृपा बरसाते हैं।

इसलिए, इस पुस्तक में उन महत्वपूर्ण घटनाओं, प्रसंगों और बाबा के चमत्कारों का संकलन किया गया है जो आई के जीवन में घटित हुई हैं। हर कथा से, हर प्रसंग से यह बात साफ़ परिलक्षित होती है कि बाबा किस तरह से हमारे जीवन में हमारा मार्गदर्शन लगातार करते रहते हैं और अपने भक्तों का हित व कल्याण करने के लिए किस तरह से वे उन पर अपनी दृष्टि बनाए रखते हैं। इनमें कुछ प्रसंग तो ऐसे चमत्कारों का वर्णन करते हैं जिनमें आई ने उन घटनाओं के

लिए लोगों को पहले ही सचेत कर दिया था जो कि बाद में अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। फिर भी, अपनी पूरी विनम्रता के साथ, आई इन सब बातों का श्रेय बाबा को ही देती हैं और सभी कार्यों का एकमेव कर्ता बाबा को ही मानती हैं।

अब थोड़ा बहुत मास्टरजी के बारे में भी उनके पूर्वज यद्यपि बाबा के भक्त थे और बाबा ने उन को साक्षात दर्शन देने की कृपा भी की थी, लेकिन जहां तक मास्टरजी की बात है, शुरू-शुरू में वे बाबा के समर्पित अनुयायी नहीं थे। हां, आई से मिलने के बाद बाबा ने मास्टरजी का जीवन ही बदल दिया और तब से उनका जीवन किसी न किसी रूप में बाबा के इर्द-गिर्द ही घूमने लगा है। बाबा ने मास्टरजी के पिता को अस्थमा रोग से चमत्कारिक रूप से ठीक कर दिया था। बाबा की इस लीला का उल्लेख भी इस पुस्तक में किया गया है।

मास्टरजी पेशे से एक स्कूल में अध्यापक थे। अपने अध्यापन जीवन के शुरुआती वर्षों में उन्होंने ज्योतिष का अध्ययन करना आरंभ कर दिया था। अभ्यास द्वारा वे उसमें पारंगत भी हो गए और सेवानिवृत्ति के बाद पूरा समय वे एक ज्योतिषी के रूप में कार्य करने लगे।

आई के साथ होने वाली मेरी शुरुआती मुलाक़ातों में और उनके श्रीमुख से बाबा के चमत्कारों के बारे में सुनते हुए मैं मंत्रमुग्ध सा हो जाता था और अक्सर आश्चर्य से स्तब्ध रह जाया करता था। फिर मुझे स्वयं भी कुछ अनुभूतियां होने लगीं, जिनमें कुछ ऐसी थीं जो आई ने कही थीं और वे शीघ्र ही मेरे सामने आ भी गई थीं।

प्रथम अध्याय में मैं उस अनुभव का वर्णन करने जा रहा हूं जो आई के साथ मेरी दूसरी मुलाक़ात में घटित हुआ था।

दशहरे की भविष्यवाणी

एक दिन, मैं अपने गुरुजी पूज्य धर्मदास बाबा के दर्शन करने के लिए उनके आश्रम जा रहा था जो कि गुजरात के सिहोर में है। गोआ से ही मेरे एक अन्य मित्र भी इस यात्रा में मेरे साथ जा रहे थे। हवाई अड्डे पर जाते समय रास्ते में हमने सोचा कि क्यों न आई और मास्टरजी से मिलते चलें और उनका आशीर्वाद भी लेते चलें।

उनसे मिल कर हम वहां से प्रस्थान करने को ही थे कि अचानक आई ने पूछा कि मैं कब तक वापस आ जाऊंगा। इससे पहले कि मैं जबाब देता, मास्टरजी बीच में ही हमें जल्दी निकलने के लिए कहते हुए आई से बोले, ''अरे, उन्हें जाने दो, उनका जहाज़ कहीं छूट न जाए!''

मुझे याद है कि तब आई ने कहा था, ''तुम दशहरे पर यहीं होंगे।'' उनका यह कहना अभी तक मुझे याद है क्योंकि यह बात उन्होंने तीन बार कही थी। छुट्टियों के दिन और दिनांक याद रखना चूंकि मेरे स्वभाव में नहीं है, इसलिए दशहरे के दिनांक का मुझे ख़याल भी नहीं था। उनका आशीर्वाद लेकर हम तुरंत चलना चाहते थे। मास्टरजी ने हमें थोड़ी सी उदी (शिरडी के साँई मंदिर से लाई हुई पवित्र भस्म) दी और फिर हम चल पड़े।

मैं गुजरात पहुंच गया और वहां आश्रम में ठहर गया। कुछ दिनों के लिए अपने गुरु जी के श्रीचरणों में वास करना मेरे लिए अद्भुत अनुभव था, ईश कृपा समान था वह अनुभव।

रोज़ाना मैं अपनी माताजी से मैं फ़ोन पर बात कर लिया करता था और वह घर के हालचाल मुझे बता दिया करती थीं। मेरी माताजी की मां और आंटीजी भी हमारे साथ गोआ में ही रहा करती थीं और मेरी माताजी ही उनकी देखभाल किया करती थीं।

अगले कुछ दिनों में बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि आंटीजी की तबियत कुछ ठीक नहीं चल रही थी और मुझसे कहा कि मैं आंटीजी से फ़ोन पर बात कर लिया करूं ताकि उनका मन बहल जाए। उनकी तबियत का ख़राब होना कोई विशेष चिंता करने वाली बात नहीं थी क्योंकि उनको पाचन संबंधी कोई न कोई गड़बड़ अक्सर रहा ही करती थी। उन्हें मतली या उल्टी की शिकायत अक्सर हो जाया करती थी जो कि घरेलू उपचार से ठीक भी जो जाया करती थी। मेरी माताजी ने तुझे तसल्ली भी दी कि आंटीजी एक-दो दिन में ठीक हो जाएंगी।

एक शाम को जब मैं आश्रम में मौन सत्र में बैठा हुआ था तब मुझे अपने अंदर से एक तीव्र इच्छा सी हुई कि मैं अपने मोबाइल को तुरंत देखूं। खुद से क्षमा मांगते हुए मैं उठ गया और ऊपर अपने कमरे में गया। जब मैंने फ़ोन में देखा तो पाया कि मेरी माताजी का संदेश आया हुआ था, ''मुझे तुरंत वापस फ़ोन करो, आंटीजी नहीं रहीं।''

उस संदेश को पढ़ते-पढ़ते मुझे अंदर एक गहन शांति का आभास हुआ क्योंकि मुझे सहजबोध हो रहा था कि उनका देह त्याग बहुत शांतिपूर्ण रहा था, और बाद में माताजी ने बताया भी। हमारे घर पंहुचने के लिए हमारे मुंबईवासी कुछ परिजन तो गोआ के लिए निकल भी पड़े थे लेकिन मैं अगली सुबह से पहले नहीं निकल सकता था क्योंकि उस रात कोई भी ट्रेन, कोई भी उड़ान उपलब्ध ही नहीं थी।

अगले दिन सुबह जब मैं हवाई अड्डे पर पहुंच गया तब मुझे अचानक याद आया कि वह तो दशहरे का दिन था। और तुरंत मुझे आई का वह कहना भी याद आ गया, ''तुम दशहरे पर यही होंगे।''

मेरे घर पंहुचने पर आंटीजी का अंतिम संस्कार भली-भांति संपन्न कर दिया गया। बाद में, पुजारी जी ने मुझे बताया कि आंटीजी बड़े ही शुभ दिन

परलोक सिधारी हैं क्योंकि दशहरे के ही दिन साँई बाबा भी महासमाधि को प्राप्त हुए थे। उनकी इस बात से हम सबको बहुत सांत्वना मिली और अत्यंत शांति की अनुभूति भी हुई।

बाद में, मैंने इस घटना के बारे में आई से चर्चा की तो उनके मुखमंडल पर मुस्कान आई। उन्होंने कुछ अधिक तो नहीं कहा किंतु इतना अवश्य कहा, ''तुम्हें यहां होना ही था, और बाबा तुम्हें यहां ले आए।'' उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि वह एक शुभ शकुन था और इस बात का प्रतीक भी था कि बाबा मेरे जीवन में आ गए हैं।

आई बार-बार यह कहा करती हैं कि जो कुछ भी उनके माध्यम से घटित होता है वह सब बाबा ही कर रहे होते हैं, स्वयं उन्हें तो कुछ पता ही नहीं होता। सभी भक्तों को वे प्रेरित और प्रोत्साहित करती हैं कि बाबा के साथ रिश्ता जोड़ने और हर बात के लिए उन पर भरोसा रखने के लिए वे बाबा को इस तरह प्रेम करें जिस तरह एक बच्चा अपनी मां से प्रेम करता है। आई का कहना है कि ऐसा होने पर हम बाबा की कृपा और संरक्षण का अनुभव कर सकेंगे।

ॐ

अगले कुछ अध्यायों में मास्टरजी और आई के जीवन के विगत दिनों का उल्लेख किया गया है कि कैसे वे साँई बाबा के भक्त बने और कैसे बाबा के माध्यम से उनके जीवन परस्पर जुड़े।

बचपन का भक्ति बीज

आई के जीवन में बाबा के साथ उनका जुड़ाव उनके बचपन में तभी हो गया था जब वे मात्र पांच वर्ष की थीं और अपनी आंटी के घर उन्होंने बाबा की मूर्ति को देखा था। आई द्वारा पूछे जाने पर आंटी ने बताया था, ''साँई बाबा ने बहुत सारे चमत्कार किए हैं और हम भी उनकी कृपा अनुभव करते हैं।'' फिर आंटी के घर जाना और बाबा की कहानियां सुनना आई को अच्छा लगने लगा। कुछ ही दिन बाद आई को किसी ने बाबा की प्रार्थना की पोथी भी दे दी थी।

उन्हीं दिनों, आई के पड़ोस में ही अनुसूया नाम की एक लडकी रहती थी जिसको किसी प्रकार की दिमागी चोट लग गई थी जिससे उसके बोलने की क्षमता पूरी तरह चली गई थी। इस कारण, वह बहुत उग्र स्वभाव की हो गई थी और वह कभी भी अचानक ही चीखने चिल्लाने लगती थी। उसके उपचार के लिए उसके माता-पिता उसे लेकर कई डाक्टरों और पंडितों-पुजारियों के पास गए थे लेकिन कहीं कुछ नहीं हुआ। अनुसूया की बहन आई की सहेली थी और बाबा की पोथी दोनों के ही पास थी। बाल सुलभ विश्वास के साथ इन दोनों ने सोचा कि अगर अनुसूया के माथे पर पोथी का स्पर्श करा दिया जाए तो वह ठीक हो जायेगी।

इसलिए, पोथी को अपने हाथों से कस कर पकड़े हुए उन्होंने उसे अनुसूया के माथे से छुआना चाहा, लेकिन इस पर वह तो एकदम उग्र हो उठी और उसने

उन्हें अपने पास भी नहीं आने दिया। तब उन्होंने उसे अपने साथ-साथ 'साँई राम'-'साँई राम' मंत्र का जाप करने के लिए कहा।

इस पर अनुसूया और भी उत्तेजित हो गई। लेकिन आई और उनकी सहेली ने 'साँई राम' मंत्र का जाप करना जारी रखा। बच्चों में कोई भक्ति भावना तो होती नहीं, लेकिन अपने भोलेपन से उनको यह विश्वास अवश्य था कि अगर अनुसूया भी इस मंत्र का जाप करेगी तो उसका हित होगा, उसको फ़ायदा होगा।

फिर कुछ विचित्र घटित हुआ। उस मंत्र का जाप सुनते-सुनते अनुसूया अचेत हो गई। उसकी मां दौड़ कर आई और उनसे पूछा, ''तुम लोगों ने इसके साथ क्या किया है?'' आई ने कहा, ''हमने तो कुछ नहीं किया है। हम तो बस बाबा के नाम का जाप कर रहे थे और अचानक ही यह अचेत हो गई।''

तभी, अनुसूया ने इशारे से अपनी मां से नोटबुक और पैन लाने के लिए कहा। कमरे में हर कोई चौकन्ना हो गया था कि कुछ असाधारण होने वाला है। आई ने अनुसूया से कहा, ''तुम बोल तो सकती नहीं हो लेकिन बाबा का नाम लिख तो सकती हो।''

अनुसूया ने पैन लिया और मराठी में 'स' लिखा, कई बार, लेकिन वह इससे आगे कुछ नहीं लिख सकी। वह बार-बार प्रयास करती लेकिन बेकार। तब आई ने उससे थोड़ा रुकने, थोड़ा इंतज़ार करने और उसके बाद लिखने को कहा। अगली बार उसने लिखा 'सा', कई बार लिखा 'सा', और फिर अंततः वह 'साँई' लिखने में कामयाब हो गई। सभी बड़े खुश हुए।

कुछ ही महीनों में वह लड़की धीरे-धीरे स्वस्थ होती चली गई और बोलने भी लगी। उसने कॉलेज तक अपनी पढ़ाई पूरी की और फिर एक सामान्य जीवन जीने लगी। इस घटना ने आई के मन में विश्वास और भक्ति का बीज बो दिया था क्योंकि छोटी उम्र में ही उन्होंने बाबा का चमत्कार अपनी आंखों के सामने घटित होते देख लिया था।

बाबा का वह फ़ोटोग्राफ़ जिसकी आई पूजा करती हैं।

दिव्य दर्शन का अनुभव

आई का बचपन महाराष्ट्र के मालवान शहर में बीता। वे अपनी मां की देखभाल भी करती थी और स्कूल भी जाती थीं।

वह शिवरात्रि का दिन था और घर के अन्य सदस्यों की तरह ही आई ने भी व्रत रखा हुआ था। उस शाम को वे और उनकी सहेली समुद्र तट की ओर टहलती हुई जा रही थीं कि अचानक ही उनको शिव और पार्वती की छवि दिखाई दी। उस पल आई एक प्रफुल्लतामय उत्साह से भर गईं थीं और उन्होंने अन्य लोगों को महादेव और देवी पार्वती की उस छवि देखने को कहा, लेकिन आई और उनकी सहेली के अलावा वह छवि किसी और को दिखाई नहीं पड़ रही थी।

वे दोनों उस छवि की ओर बढ़ने लगीं लेकिन उसके निकट नहीं पहुंच सकीं। अपने हाथ जोड़ कर दोनों ही 'शिव शंकर पार्वती' का उच्चारण करते हुए उस छवि की ओर बढ़ती रहीं। देखने वाले यही समझते रहे कि दोनों लड़कियां पगला गई हैं।

वे उस छवि का अनुसरण करते हुए नीचे जाती सड़क पर चलती रहीं। अंततः, उन्होंने उस छवि को अस्त होते हुए सूर्य की किरणों में लोप एवं अनंत में विलीन होते देखा।

आई को लगा कि वह उस छवि का दर्शन केवल अपनी सहेली के कारण कर सकी थीं जो कि भगवान शिव की भक्त थी। लेकिन उनकी सहेली का मानना यह था कि उसे आई के कारण वे दर्शन हुए थे। इस उल्लेखनीय घटना के बाद साँई बाबा में आई की आस्था और भी गहरी होती चली गई।

मास्टरजी के पूर्वजों पर रही थी बाबा की कृपा

जिस प्रकार आई को बचपन से ही बाबा के प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होने लगे थे, उसी प्रकार अपने पिता और दादी के माध्यम से मास्टरजी का भी जुड़ाव बाबा के साथ बचपन से ही हो गया था। उनके पिता व दादी ने बाबा के जीवित रहते उनके साक्षात दर्शन भी किए थे।

1910 की बात है। तब साँई बाबा की प्रसिद्धि व लोकप्रियता चरम पर थी और उनके दर्शन करने के लिए उनके भक्तों के जत्थे के जत्थे शिरडी चले आ रहे थे। मास्टरजी के पिता भी बाबा की ओर आकृष्ट हो गए थे।

जब वह बाबा के दर्शन के लिए द्वारकामयी की उस मस्जिद में पहुंचे जहां बाबा रहा करते थे तो उन्होंने देखा कि अपने भक्तों के बीच में बैठे हुए बाबा चिलम पी रहे थे। जब उन्होंने मास्टरजी के पिता को देखा तो उनसे नौ रुपए की दक्षिणा मांगी और अचानक ही वह चिलम मास्टरजी के पिता को पीने के लिए दे दी।

मास्टरजी के पिता एकदम आश्चर्यचकित रह गए थे। वे समझ ही नहीं पा रहे थे कि वे क्या करें क्योंकि उन्होंने उससे पहले कभी चिलम को हाथ भी नहीं लगाया था। बाबा के निकट बैठे कुछ भक्तों ने मास्टरजी के पिता को चिलम पीने के लिए प्रोत्साहित किया कि बाबा कहीं नाराज़ न हो जाएं।

मास्टरजी के पिता को निरीह भाव से चिलम से कश लेना पड़ा, लेकिन कश लेते ही उन्हें बड़ी ज़ोरदार खांसी उठ गई। दरअसल, उनको पुराना दमा

था - बचपन से ही, और चिलम के धुएं ने खांसी का ऐसा जबरदस्त धसका उठा दिया था जो रोके नहीं रुक रहा था।

यह देख कर बाबा ने उनकी कमर पर ज़ोर से एक धौल जमा दिया जिससे उनकी खांसी तुरंत थम गई। उसके बाद जो हुआ वह चमत्कारपूर्ण था। उनका दमा चला गया, हमेशा के लिए!

मास्टरजी के दादाजी ने जब इस लीला के बारे में सुना तो वे भी साँई बाबा से मिलने और उनके पवित्र दर्शन करने के इच्छुक हो उठे। पहली ही मुलाक़ात में बाबा ने मास्टरजी के दादाजी को आशीर्वाद दे दिया था और प्रसाद के रूप में उन्हें दो रुपए भी दिए थे। बाबा ने यह भी बोला कि मास्टरजी के दादाजी एक महान भगवद् भक्त (श्रीमद् भगवद्गीता की शिक्षाओं में स्वयं को निमग्न रखने वाले) थे। उनका यह कहना दादाजी के लिए एक बड़ा सम्मान था।

बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करने के कुछ ही दिन बाद, मास्टरजी के दादाजी की अचानक पदोन्नति हो गई थी और वे नासिक ज़िले के डिप्टी कलक्टर हो गए थे जिसे उन दिनों एक बहुत प्रतिष्ठित पद माना जाता था।

बाद में, बाबा के दर्शन कर लेने के बाद, मास्टरजी के पिताजी बाबा के निकट गए और उन्हें दीक्षा देने का अनुरोध किया। बाबा ने उनसे कहा, ''तुम्हें तो उपदेश पहले ही दे दिया गया है, दोबारा क्यों मांग रहे हो?''

मास्टरजी के पिताजी थोड़ा चकित, विस्मित हो गए। शुरू में तो वे समझ नहीं पाए कि बाबा के कहने का अर्थ क्या है, लेकिन जब उन्होंनें अतीत में झांक कर देखा तो वे उनकी सर्वज्ञता से धन्य हो गए।

बात तब की है जब मास्टरजी के पिताजी 12 साल के रहे होंगे। वे अपने मित्र के साथ कृष्णा नदी में स्नान कर रहे थे। जब वे पानी से बाहर निकले तो एक संत उनके निकट आए उनके कान में फुसफुसाते हुए एक मंत्र पढ़ा जैसे वह उन्हें दीक्षा दे रहे हों। यह घटना समय के साथ विस्मृति में चली गई थी जिसका बाबा अब स्मरण करा रहे थे।

मास्टरजी के माता-पिता और दादा-दादी सचमुच सौभाग्यशाली रहे थे कि वे साँई बाबा के जीवन काल में ही उनसे मिल सके और अपने पैतृक स्थान जमखंडी (महाराष्ट्र) लौट आने के बाद भी उनकी पूजा करते रहे थे।

तथापि, उनके कुटुंब के कुछ बड़े लोगों ने बाबा की आराधना पर आपत्ति उठाई थी क्योंकि वह परिवार एक परंपरागत हिंदू ब्राह्मण परिवार था और बाबा एक मुस्लिम फ़कीर थे। लेकिन मास्टरजी के पिता ने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और बाबा की फ़ोटो एक सूटकेस के अंदर लगा ली जिसकी पूजा वे अपने अंत समय तक निजी तौर पर करते रहे थे।

मास्टरजी जब छोटी उम्र के थे, तब उन्होंने अपने पिताजी के पास बाबा का फ़ोटो देखा था। बच्चें जैसी मासूमियत से उन्होंने अपने पिताजी से पूछा था, ''आप इस बुड्ढे आदमी की पूजा क्यों करते हैं? ये कौन है?'' उनके पिता हालांकि बहुत शांत और संतुलित स्वभाव वाले व्यक्ति माने जाते थे, लेकिन उनकी इस बात पर वे क्रोधित हो उठे थे। उन्होंने सख़्ती से मास्टरजी को सुधारते हुए कहा था, ''खबरदार, फिर कभी इनको 'बुड्ढा आदमी' मत कहना! ये तो बाबा हैं - शाश्वत का अवतार हैं ये! एक दिन तम्हारी दुनिया इनके नाम के ही इर्द-गिर्द घूमेगी!''

समय बीता और मास्टरजी के पिताजी के शब्द सच होते गए, विशेष रूप से आई के साथ विवाह के बाद तो मास्टरजी का सारा जीवन साँई के ही इर्द-गिर्द ही घूमने लगा है। बाबा के नाम को दूर-दूर तक प्रसारित करने में भी मास्टरजी ने बहुत मदद की है क्योंकि जब भी लोग उनके पास ज्योतिष संबंधी किसी काम के लिए आते हैं तो वे उन्हें बाबा की लीलाओं और आई के अनुभवों के बारे में बताया करते हैं एवं इस प्रकार वे अन्य अनेक भक्तों पर भी बाबा की छाप छोड़ते हैं, उन्हें बाबा के प्रति सबको प्रेरित करते हैं।

आई और मास्टरजी का विवाह कैसे हुआ

मास्टरजी अपने दादाजी से बहुत जुड़े रहे थे और उनकी फ़ोटो हमेशा अपने पर्स में रखा करते थे। मास्टरजी जब युवा थे तब वे मुंबई के एक लॉ कालेज में पढ़ रहे थे। उनका इरादा एक दिन अपनी वकालत शुरू करने का था।

लेकिन जब उन्होंने लॉ कॉलेज से ग्रेजुएशन किया ही था कि अचानक ही उनके दादाजी का देहांत हो गया। इस बात का उन्हें बड़ा सदमा पहुंचा और वे बहुत उदास और खिन्न रहने लगे -अवसाद जैसी अवस्था में। उनके परिवार वालों के मन में आया कि अगर वे किसी कामकाज में लग जायेंगे तो इस उदासी से उबर सकेंगे और जीवन में आगे बढ़ सकेंगे। शुरू-शुरू में उन्हें कुछ काम मिले भी लेकिन वे सभी काम उन्हें अटपटे लगे, वे उन्हें कुछ रुचे-जंचे नहीं, और वे संसार के प्रति अनासक्त और उदासीन होते चले गए।

विचित्र घटनाक्रम के चलते वे कोल्हापुर पहुंचे और वहां से मालवान पहुंचे जहां उन्हें अंग्रेज़ी अध्यापन का कार्य मिल गया। उन्हें ठहरने की जगह भी मिल गई और वे अध्यापन की अपनी दिनचर्या में रम गए, लेकिन फिर भी उनके मन में दादाजी को खोने का दुख बना ही रहता था।

जल्दी ही यह बात सब को पता चल गई कि मास्टरजी एक ज्योतिषी भी हैं। एक सुबह उनके स्कूल के सामने रहने वाले सज्जन उनके पास आए और अपने परिवार की कुंडली दिखाने के वास्ते अपने घर आने का आमंत्रण उन्हें दिया। मास्टरजी उस दिन दोपहर बाद उनके घर जाने के लिए सहमत हो गए।

वह घर काफ़ी बड़ा था और वे लोग काफ़ी संपन्न लग रहे थे। वे काजू का व्यापार और निर्यात करने का काम करते थे।

मास्टरजी को पांच कुडलियां देखने के लिए दी गईं। मास्टरजी द्वारा किए जा रहे विवेचन को सुन कर वे लोग काफ़ी प्रसन्न लग रहे थे।

तब, घर की प्रमुख महिला मास्टरजी के पास आ कर बैठीं और आख़िरी कुंडली का सविस्तार विवेचन करने का अनुरोध करते हुए बोलीं, ''यह बताइए कि इसका विवाह कब होगा?''

तब तक मास्टरजी का मन वापस दादाजी की यादों में चला गया था और वे थोड़ी व्याकुलता अनुभव करने लगे थे। उस कुंडली पर एक सरसरी निगाह डालते हुए उन्होंने कह दिया, ''अब से लगभग दो महीनों में हो जायेगा।''

उस महिला ने अविश्वासपूर्वक पूछा, ''क्या आप सच बता रहे हैं? क्या इसका विवाह वाक़ई हो जायेगा?''

मास्टरजी ने हैरान होकर पूछा, ''ताई, आप मुझसे इस तरह क्यों पूछ रही है? क्या कोई समस्या है?''

''नहीं, नहीं, कृपया कुंडली को अच्छी तरह देख कर बताइए,'' वह बोली।

मास्टरजी ने जब उस कुंडली को ध्यान से देखा तो उन्हें हैरत हुई यह देख कर कि जिस महिला के विवाह होने के बारे में पूछा जा रहा था वह 43 साल की थी।

अपनी प्रवीणता पर भरोसा रखते हुए और अपनी बात पर डटे रहते हुए उन्होंने कह दिया, ''ताई, जो मैंने कहा है वही होने वाला है। उम्र कोई चिंता वाली बात नहीं है। वह चाहे 60 की हों या 70 की, ऐसा ही होने जा रहा है।'''

उनकी बात सुन कर वह महिला पुलक उठी थी। उसने मास्टरजी को जलपान के लिए ठहरने को कहा और अंदर चली गई। कुछ देर बाद एक नवयुवती एक ट्रे में चाय-नाश्ता लेकर कमरे में आई, लेकिन वह उस परिवार की नहीं लग रही थी, शायद वहां घर का काम करने वाली रही हो।

लेकिन, फिर जो हुआ वह चमत्कारपूर्ण था, जीवन को परिवर्तित कर देने वाला पल था। उस समय उस कमरे में केवल मास्टरजी और वह युवती ही थे।

उस युवती ने जैसे ही ट्रे को मास्टरजी के सामने मेज़ पर रखा, तो उन्होंने यकायक उसका हाथ पकड़ लिया और बोले, ''क्या तुम मुझसे विवाह करोगी?''

''हां,'' उसने बड़े सहज भाव से कहा और शीघ्रता से कमरे से चली गई।

जो कुछ हुआ उस बारे में मास्टरजी स्वयं हैरान थे और उन्हें विश्वास नहीं हो पा रहा था। उन्हें समझ नही आ रहा था कि उन्हें क्या हो गया था कि उन्होंने इस तरह का बर्ताव कर डाला था।

उन्हें कुछ ग्लानि, कुछ पश्चाताप सा भी हो रहा था और अपनी इस धृष्टता के लिए वे उस लड़की से क्षमा मांगना चाहते थे। अगले दिन, इत्तफ़ाक से वह उन्हें बाज़ार में टकरा भी गई, तो वे तुरंत उससे बोले, ''मैं क्षमा चाहता हूं, पता नहीं कल मुझे क्या हो गया था। मैं तुम्हारा नाम भी नहीं जानता और मैंने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। कृपया मुझे क्षमा कर दें।''

इस पर आई का उत्तर था, ''नहीं, नहीं, यह तो पूर्व निर्धारित था। आपके आने से पहले मैंने एक सपना देखा था जिसमें एक वयोवृद्ध सज्जन ने मुझसे उनके पोते की देखभाल करने के लिए आग्रह किया था!''

यह सुन कर मास्टरजी एक बार फिर हैरत में पड़ गए थे। उन्होंने अपना पर्स निकाला और उसे अपने दादाजी का फ़ोटो दिखाया। उसने देखते ही पहचान लिया कि वही सज्जन उसके सपने में आए थे!

इस घटना के घटित होने से पहले आई का रिश्ता एक स्थानीय युवक से लगभग तय हो चुका था लेकिन पता चला कि उस लड़के का चरित्र संदेहास्पद था, और इसलिए वह रिश्ता अपनी परिणति तक नहीं पहुंच पाया था। तब आई की सहेलियों ने उन्हें बहुत बुरा-भला कहा था, ''यह तूने क्या किया? एक मौक़ा गवां दिया।'' इस पर आई का उत्तर था, ''मेरा मौक़ा तो आ रहा है।'' और इस बात के ठीक दो सप्ताह बाद मास्टरजी उनके सामने थे।

कुछ दिन बाद मास्टरजी ने आई का फ़ोटो अपने पिताजी को भेजा और जो हुआ था उसका विवरण भी लिखा। उनके पिताजी ने अनुमति दे दी और लिखा, ''मीना (आई का वास्तविक नाम) बाबा की बड़ी भक्त है। जो होगा अच्छा ही होगा। उससे विवाह करने में देरी मत करो।''

विवाह के लिए सहमत होने से पहले आई ने दो शर्तें रखीं थीं जिन्हें मास्टरजी को स्वीकार करना पड़ा था। पहली शर्त यह थी कि उनकी मां, जिनकी मानसिक अवस्था पूर्ण स्वस्थ नहीं कही जा सकती थी, हमेशा उनके साथ रहेंगी, और दूसरी यह कि बाबा उनके जीवन में सर्वोच्च प्राथमिकता रहेंगे।

मास्टरजी सहर्ष सहमत हो गए थे और आई की दोनों इच्छाओं के लिए पूरे मनोयोग से हमेशा उनका सहयोग करते रहे। पहली मुलाक़ात के बाद एक वर्ष के अंदर ही, अप्रैल 1960 तक वे दोनों जीवन साथी बन गए।

ॐ

मास्टरजी की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई थी। जिस महिला के बारे में प्रश्न किया गया था उसका विवाह दो महीने के अंदर ही हो गया था।

मास्टरजी जब अपनी उस मुलाक़ात की कहानी सुनाते हैं तो श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। वह आई के बारे में कुछ नहीं जानते थे - नाम, आयु, जाति, और परिवार कुछ भी नहीं - और विवाह का प्रस्ताव कर बैठे थे। वह सब पूर्व निर्धारित था, वह बाबा की इच्छा थी।

अपने दादाजी का वह फ़ोटो जो मास्टरजी हमेशा अपने पर्स में रखा करते थे।